P.G. SEM-2 Paper-V

प्रगतिशील साहित्य की विशेषताएँ –

1936 के बाद का दौर

प्रगतिशील आन्दोलन का दौर माना जाता है उस समय के आस पास जो रचनाएँ लिखी गयी वह प्रगतिशील साहित्य के अन्तर्गत आती है। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के सभापति प्रेमचन्द को बनाया गया। जो विचारधारा राजनीति के क्षेत्र में समाजवाद और दर्शन में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद है वही साहित्यिक क्षेत्र में प्रगतिवाद है। केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगलसिंह सुमन, रामविलास शर्मा इत्यादि प्रगतिशील साहित्यकार है और उनकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(1) शोषितों की दीनता का चित्रण – उस समय द्वारा समाज दो वर्गों में विभक्त था – शोषक और शोषित। शोषण की चक्की में पिसनेवाला किसान मजदूर पीड़ित की दशा को प्रगतिवादी कवि ने कारुणिक चित्रण किया है कवि दिनकर ने ठीक ही कहा है –

श्वानों को मिलता दूध वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की छाती में चिपक, ठिठुर, जाड़े की रात बिताते हैं।

(2) शोषक के प्रति घृणा – प्रगतिशील काव्य में शोषक वर्ग स्वार्थी, अन्यायी, निर्दयी एवं कपटी होता है। इस वर्ग में पूँजीपति, व्यापारी एवं जमींदार आते थे। प्रगतिवादी इनकी शोषक प्रणाली को नष्ट कर समाज में समता स्थापित करना चाहते हैं।

Scanned with CamScanner

(3) रूढ़ि विरोध — प्रगतिवादी कवि ईश्वर को सृष्टि का नियंता न मानकर जगत के द्वंद्व को सृष्टि का विकास का कारण स्वीकार करता है। उसे ईश्वर की सत्ता, परलोक भाग्यवाद, धर्म, स्वर्ग नरक आदि पर विश्वास नहीं है। इसलिए प्रगतिवादी कवि ने धार्मिक विश्वासों एवं रूढ़ियों को तोड़कर विप्लव के गीत गाए हैं। पंत जी ने युग की कोकिला का आह्वान किया है कि वह अपने पावक कणों से जीर्ण और पुरातन को नष्ट कर दे —

"गा कोकिला बरसा पावक कण
नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन।"

(4) क्रांति का स्वर — प्रगतिवादी विचारक समाज में समता स्थापित करना चाहते थे। सामाजिक समता के लिए मार्क्सवाद में क्रांति का समर्थन किया गया है। प्रगतिवादि कवि चाहता है कि समाज में व्याप्त पूँजीवादी व्यवस्था नष्ट हो और उसके लिए इन कवियों ने क्रांति की भावना को जनता के भीतर जगाने का अथक प्रयास किया है —

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड़ जायें, त्राहि त्राहि स्वर नभ में छाए।
नाश और सत्यानाशों का धुआँधार जग में छा जाए।"

(5) नारी चित्रण — प्रगतिवादी कवियों का मानना है कि उस समय नारियों का खुलकर शोषण होता रहा है। वह पुरुष की दासताजन्य लौह बन्धनों में बंद है। वह दिन रात पुरुष के साथ-साथ आर्थिक विषमताओं को झेलती है उसे निराला ने "वह तोड़ती

पत्थर" के माध्यम से बताया है वहीं नागार्जुन ने "तालाब की मछलियाँ" नामक कविता के बहाने नारियों की वास्तविक स्थिति का चित्रण किया है। वे मछली से स्त्रियों की तुलना करते हैं—

"हम भी मछली, तुम भी मछली
दोनों ही उपयोग की वस्तु हैं
ज्ञाता स्वाद सुभोजन, सजनी हम दोनों को
अनुपम बतलाते हैं।"

(6) सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण — प्रगतिवादी कवियों में देश-विदेश में उत्पन्न समसामायिक समस्याओं और घटनाओं की अनदेखी की है फिर नहीं है। साम्प्रदायिक समस्याओं — भारत-पाक विभाजन, कश्मीर समस्या, बंगाल का अकाल, बाढ़, अकाल, बेकारी, चरित्रहीनता आदि विषयों का बड़े पैमाने पर चित्रण किया है। किसानों और मजदूरों की हालत को नागार्जुन ने इन शब्दों में बयान किया है—

"मंडराती है यम की नानी खेतों में, खलिहानों में
भूख-अकाल महामारी की फसल उगी मैदानों में
लूट पाट की होड़ मच गयी नरभक्षी हैवानों में
लटक रहा है ताला गल्ले की सरकारी दुकानों में।"

(7) शैलीगत विशेषता — प्रगतिवाद जन आन्दोलन के रूप में उभरा था इसलिए इन कवियों ने अपनी भाषा को अत्यंत सरल और जनभाषा के नजदीक रखा शैली अलंकार विहीन एवं मुक्त छंद का प्रयोग किया।

सारतः कहा जा सकता है कि प्रगतिशील काव्य की आयु कम रही फिर भी इन कवियों का योगदान अविस्मरणीय है।

Scanned with CamScanner